विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। –जैक वेल्व

प्लास्टिक उपयोगी, किन्तु उसका कचरा गंभीर समस्या बना

प्लास्टिक का लगभग एक सदी पहले आविष्कार हुआ। उसके बाद से, प्लास्टिक हमारे जीवन के हर पहलू में प्रवेश करता चला गया है। इस टिकाऊ, हल्के वजन वाले अत्यंत बहुमुखी पदार्थ के साथ के बिना कुछ मिनट भी चलना हमारे लिये आज मुश्किल है। पश्चिम में विज्ञान के एक विद्यार्थी ने पिछले दिनों एक अनोखा प्रयोग किया। उसने तय किया कि वह 24 घंटे तक पूरी तरह से प्लास्टिक के बिना रहने की कोशिश करेगा और प्लास्टिक की बनी किसी भी चीज को वह नहीं छूएगा। वह विद्यार्थी यह देखने और जानने का प्रयास कर रहा था कि हम प्लास्टिक के किस सामान के बिना बिल्कुल भी नहीं रह सकते हैं, और प्लास्टिक की वे कौन सी चीजें हैं जिन्हें हम छोड सकते हैं! सभी सामान्य लोगों की तरह वह भी रोजाना सुबह उठने के तुरंत बाद अपना स्मार्टफोन चेक करता था, संदेशे देखता था। अपने लिये नियत प्लास्टिक-विहीन दिन के लिए उसने अपना सेलफोन पहले ही अलमारी में रख दिया क्योंकि सेलफोन हाथ में कैसे ले? उसके व्रत में यह संभव नहीं था क्योंकि एल्यूमीनियम, लोहे, लिथियम, और तांबे के अलावा प्रत्येक स्मार्टफोन में प्लास्टिक भी होता है। उसने अपने आप को बहुत हल्का पाया। हालांकि फोन तक उसकी पहुंच न होने से वह शुरू में थोडा अस्त-व्यस्त जरूर हुआ। लेकिन साथ ही उसने अपने आप को खुला हुआ या बंधन मुक्त भी महसूस किया। प्लास्टिक स्पर्श-विहीन दिन की सुबह उठ कर वह बाथरूम की तरफ जाने लगा मगर उसके अंदर जाने से पहले उसे रुकना पडा। बाथरूम का दरवाजा ही प्लास्टिक का बना था। वह अपने नियमित टूथपेस्ट, टूथब्रश और तरल साबुन का उपयोग भी नहीं कर सकता था, जो सभी प्लास्टिक के पैक में थे या प्लास्टिक से बने थे। इस प्रकार उसने अगले 24 घंटों में पाया कि प्लास्टिक से पूरी दूरी बनाये रखना आज के इंसान के लिये नामुमकिन है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि प्लास्टिक ने हमारे लिये हजारों आधुनिक सुविधाओं को संभव बनाया है और उनके बिना हमारा गुजारा नहीं हो सकता। लेकिन इसके अनेक नुकसान भी हैं, खासकर पर्यावरण के लिए, यह भी सब जानते हैं। प्लास्टिक का उपयोग समस्या नहीं है। हम प्लास्टिक का उपयोग तो जीवन के हर क्षेत्र में करते हैं किन्तु उसके कचरे से निबटना हमारे लिये मुश्किल होता जा रहा है। इसका कारण है प्लास्टिक का प्राकृतिक रूप से नष्ट न होना। जिस प्रकार अन्य चीजें मिट्टी में मिल जाती है उस प्रकार प्लास्टिक नष्ट नहीं होता। प्लास्टिक के परमाणुओं के बीच बंधन इतना मजबूत होता है कि उसे खत्म करना मुश्किल होता है। अगर नष्ट करने के लिए इसे जलाया जाता है तो उससे अत्यंत हानिकारक विषैले रसायनों का उत्सर्जन होता है। उसे ज़मीन में गाड दिया जाय तो हजारों साल दबा रह कर भी वह विखंडित नहीं होगा। अधिक से अधिक धरती के ताप से वह छोटे-छोटे कणों में टूट जाएगा किन्तु पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होगा। अगर उसके कचरे को समुद्र में डाल दिया जाय तो वह वहां भी समय के साथ छोटे-छोटे टुकड़ों में खंडित होकर उसके पानी को प्रदूषित करता रहेगा और समुद्री जीवों को नुकसान पहुंचाता रहेगा। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर साल लगभग 400 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक का कचरा पैदा होता है। अंदर फोम वाले टेकआउट कंटेनर, पेन, कप, अमेज़ॅन पैकेज और निश्चित रूप से कैरी-बैग का हम भरपूर उपयोग करते हैं। दुनिया में प्लास्टिक से बनने वाले सामानों में से लगभग आधे सिर्फ एक बार प्रयोग करने के बाद फेंक दिये जाते हैं। इसे हम यूज़ एण्ड थ्रो कहते है। रिपोर्ट में कहा गया है कि, हम एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक उत्पादों के जबरदस्त आदी हो गए हैं। मगर अब इसके गंभीर पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी परिणाम सामने आ रहे हैं। बेशक, प्लास्टिक के बिना जीवन की कल्पना करना पूरी तरह एक बेतुका विचार है। इसके दोषों के बावजूद, चिकित्सा उपकरणों और हेलमेटों में उसका उपयोग नकारा नहीं जा सकता जिसका वह एक महत्वपूर्ण घटक होता है। कई मामलों में प्लास्टिक पर्यावरण की मदद भी कर सकता है। जैसे प्लास्टिक के हवाई जहाज के पुर्जे धातु की तुलना में हल्के होते हैं, जिसका अर्थ है कम ईंधन की खपत और कम कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन। इसी प्रकार सौर पैनलों और पवन टर्बाइनों में प्लास्टिक के पुर्जे होते हैं। देखा जाय तो दुनिया प्लास्टिक के सामान से भरी पडी है, विशेष रूप से डिस्पोजेबल – काम में लेकर फैंक देने वाली वस्तुओं से। पृथ्वी नीति संस्थान का अनुमान है कि लोग हर साल एक ट्रिलियन सिंगल-यूज़ प्लास्टिक बैग का उपयोग करते हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायर्नमेंटल हेल्थ साइंसेज के अनुसार, कुछ प्लास्टिक एडिटिव्स - जैसे कि बीपीए और फाथेलेट्स - मनुष्यों में अंतःस्त्रावी तंत्र को बाधित कर सकते हैं। मानव शरीर पर इसके चिंताजनक प्रभावों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के अलावा पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर कम हो जाने और महिलाओं में थायरॉयड हार्मोन का स्तर कम हो जाने तथा समय से पहले बच्चे का जन्म भी शामिल हैं।

पिछली सदी के नौवें दशक में प्लास्टिक उद्योग में एक कैच लाइन चलती थी प्लास्टिक इसे संभव बनाते हैं जो आज भी सच लगती है। प्लास्टिक ने हमारी दुनिया में कब प्रवेश किया, इस पर कुछ बहस है। कई लोग इसका आविष्कार 1855 में बताते हैं जब एक ब्रिटिश धातु विज्ञानी अलेक्जेंडर पार्क्स ने कपडे के लिए जलरोधक कोटिंग के रूप में थर्मोप्लास्टिक सामग्री का पेटेंट कराया था। उसने नये पदार्थ को 'पार्केसिन' कहा। अगले दशकों में, दुनिया भर में प्रयोगशालाओं ने उसके अनेक रूप और प्रकार विकसित कर दिये। मगर सभी का रसायन शास्त्र समान था। वे सभी परमाणुओं की बहुलक श्रृंखलाएं हैं, और वे अधिकांश पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस से बने होते हैं। उनमें मिलाये जाने वाले रसायनों के कारण प्लास्टिक अन्यों से बेतहाशा भिन्न होते हैं। वे अपारदर्शी, पारदर्शी, झागदार या कठोर, खिंचाव वाले या भंगुरशील भी हो सकते हैं। उन्हें पॉलिएस्टर और स्टायरोफोम सहित कई नामों से जाना जाता है, और पीवीसी और पीईटी जैसी आशुलिपि से भी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्लास्टिक निर्माण में तेजी आई क्योंकि वह युद्ध के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण था। उसने नायलॉन के पैराशूट, प्लेक्सीग्लास, विमान की खिडकियां जैसी सुविधाएं दी। युद्ध के बाद प्लास्टिक के उत्पादन में और बडा उछाल आया। प्लास्टिक फॉर्मिका काउंटर, रेफ्रिजरेटर लाइनर्स, कार के पुर्जे, कपडे, जूते आदि। वह उत्पाद जिसे कुछ समय के लिए इस्तेमाल करने के वास्ते डिज़ाइन किया गया था, सभी प्रकार की चीजों में चला गया। हालत ने करवट तब ली जब प्लास्टिक सिंगल-यूज सामान में उपयोग में लिया जाने लगा और प्रीफ़ैब कूड़े के ढेर लगने लगे। यहीं से हम मुश्किल में पडने शुरू हुए। स्ट्रॉ, कप, बैग और अन्य उत्पादों के कचरे ने पर्यावरण के लिए विनाशकारी परिणाम पैदा किए हैं। हम अपने शहरों में पाते हैं कि सडकों पर बिखरा अधिकांश कचरा प्लास्टिक का ही होता। खास कर प्लास्टिक की थैलियां। उधर प्यू चैरिटेबल ट्रस्टों के एक अध्ययन के अनुसार, हर साल 11 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक प्लास्टिक महासागरों में प्रवेश करता है, पानी में रिसता है, खाद्य श्रृंखला को बाधित करता है और समुद्री जीवन का दम घोंटता है।

ऑर्गनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट के अनुसार प्लास्टिक कचरे का लगभग पांचवां हिस्सा जल जाता है और हवा में कार्बनडाईआक्साइड छोडता है। यह संगठन यह भी रिपोर्ट करता है कि केवल नौ प्रतिशत प्लास्टिक का पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। प्लास्टिक को रिसाइकल करना किफायती नहीं हैं, और जब रिसाइकल किया जाता हैं तो उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। प्लास्टिक हमारे स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचा सकता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायर्नमेंटल हेल्थ साइंसेज के अनुसार, कुछ प्लास्टिक एडिटिव्स – जैसे कि बीपीए और फाथेलेट्स – मनुष्यों में अंत:स्त्रावी तंत्र को बाधित कर सकते हैं। मानव शरीर पर इसके चिंताजनक प्रभावों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के अलावा पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर कम हो जाने और महिलाओं में थायरॉयड हार्मोन का स्तर कम हो जाने तथा समय से पहले बच्चे का जन्म भी शामिल हैं। माइक्रोप्लास्टिक, उपभोक्ता उत्पादों और औद्योगिक कचरे के निपटाने और उसे तोडने के परिणामस्वरूप हमारे वातावरण में प्लास्टिक के बेहद छोटे-छोटे टुकडे या कण हर जगह फैले हुए हैं। हम जो पानी पीते हैं, जिस हवा में हम सांस लेते हैं, और महासागरों में हर कहीं प्लास्टिक के कण विद्यमान होते हैं। वे अन्य चीजों के अलावा, खराब प्लास्टिक कूड़े से आते हैं।

प्लास्टिक की इस समस्या का समाधान पूरी तरह से उपभोक्ताओं के कंधों पर नहीं डाला जा सकता है। हमें इस पर सभी मोर्चों पर काम करने की जरूरत है। समझदार लोगों का कहना है कि इस समस्या पर समग्रता से ध्यान देने की जरूरत है। प्लास्टिक समस्या भी है और उपयोगी भी है। यह प्रगति की समस्या भी है। प्लास्टिक से दुश्मनी की बात नहीं है। दुश्मनी उसके एकल उपयोग से हो तो बेहतर है। किसी चीज को एक बार इस्तेमाल करके फेंक देने की संस्कृति की बात है। इसीलिए दुनिया भर में ऐसे प्लास्टिक के उपयोग को कम से कम करने की कोशिश की जा रही है जो दोबारा इस्तेमाल में न आ सके। केंद्र सरकार ने एकबारीय उपयोग वाले प्लास्टिक पर पूर्णत: प्रतिबंध लगाया हुआ है। मगर हम अपने चारों तरफ उसका कोई असर नहीं देख रहे हैं। राज्य सरकार को सबसे अधिक आमदनी शराब की बिक्री से मिलने वाले आबकारी वाले कर से होती है। संविधान के निर्देश के अनुरूप तो सरकार को शराब को बंद करना चाहिए मगर ऐसा नहीं होता। अब सरकार शराब को प्लास्टिक की बोतलों व पाउच में पैक करने की भी अनुमति देने लागी है। ऐसा करके वह प्लास्टिक के कचरे में ही इजाफा करती है बल्कि नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए संविधान के दिशानिर्देशों की भी अनदेखी करती है।

– अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

एनकाउन्टर इतना तो बुरा नहीं है

प्रो. कैलाश सोडाणी

आज कल देश में घटित घटनाक्रम पर चर्चा के दौरान मेरे एक मित्र ने एक सटीक दृष्टान्त सुनाया। महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। द्वापर का सबसे महान योद्धा भीष्म पितामह शरशय्या पर अपने जीवन की अंतिम रात्रि व्यतीत करते हुए सूर्य के उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहा था। संभवतया धरा छोड़ने से पहले उनके मन में इस युद्ध को लेकर जो कुछ भ्रम एवं प्रश्न थे उन्हें दूर करने के लिए अंतिम समय में श्री कृष्ण से संवाद आवश्यक समझ रहे थे। सौभाग्य से उसी समय श्री कृष्ण का आगमन होता है और वो भीष्म पितामह को प्रणाम करते हैं।

भीष्म बोले– एक बात बताओ कन्हैया। इस युद्ध में जो कुछ हुआ, क्या वह ठीक था? कौरवों के कृत्यों पर चर्चा करने का तो अब कोई अर्थ नहीं है। परन्तु क्या पांडवों की ओर से जो हुआ वह सही था? जैसे आचार्य द्रोण का वध, दुर्योधन की जंघा के नीचे प्रहार, दु:शासन की छाती का चीरा जाना, निहत्थे कर्ण का वध, क्या यह सब उचित एवं नैतिक था ?

श्री कृष्ण ने कहा– कुछ भी अनुचित एवं अनैतिक नहीं हुआ है पितामह। वही हुआ जो होना चाहिए था। जब क्रूर और अनैतिक शक्तियां सत्य और धर्म का समूल नाश करने के लिए आगे बढ़ती हैं तो नैतिकता अर्थहीन हो जाती है पितामह। तब महत्वपूर्ण होती है विजय, केवल विजय। कंस, जरासंध, दुर्योधन, दु:शासन, शकुनी जैसे घोर पापियों की समाप्ति के लिए हर छल उचित है। पाप का अंत आवश्यक है, वह चाहे जिस विधि से किया जावे। नि:सन्देह इतिहास से शिक्षा ली जानी चाहिए पितामह। परन्तु निर्णय वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर ही लेना चाहिए तभी विजय को सुनिश्चित किया जा सकता है। पापियों के सामने नैतिकता का पाठ करना आत्मघाती होता है।

मैं किस विषय पर क्या कहना चाहता हूँ आप समझ चुके हैं। आजकल प्रजातंत्र के तथाकथित शुभचिन्तकों एवं लुटियंस के पाँच सितारा वातावरण में कलम चलाने वाले पत्रकार बन्धुओं को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। पिछले तीस वर्षों से अतीक के आतंक पर जिनकी कलम नहीं चली, प्रजातंत्र के प्रखर प्रवक्ताओं ने कभी आवाज उठाने की जहमत नहीं उठाई। आज उन सभी के घरों में मातम छाया हुआ है। इस प्रकार की मौत पर आँसू बहा रहे हैं। पुलिस और सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। अब तक उत्तर प्रदेश का आम नागरिक इन माफियाओं के आतंक, अत्याचार एवं अपमान के साये में जीने के लिए मजबूर था। आतंक की पराकाष्टा देखिये कि लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में मतदान गुप्त होते हुए भी माफिया ब्रदर्स विधानसभा एवं लोकसभा में पहुँच जाते थे। न्यायाधीश भी जिनके मुकदमों की सुनवाई के लिए मना करते रहे हैं। बेचारे गवाहों की तो कोई औकात ही नहीं है। जेल फाइव स्टार सुविधाओं के साथ इनका दूसरा सुरक्षित सरकारी आवास है। आई.ए.एस. एवं आई.पी.एस. अधिकारी माफियाओं के ड्राइंगरूम में बैठकर चाय पीने और इनके साथ बैडमेन्टन/टेबल टेनिस खेलने में गर्व का अनुभव करते है। ऐसे भयभीत पूर्ण वातावरण में आम नागरिक कैसे जी रहा होगा, हम सोच सकते है।

इसलिए एनकाउन्टर गैर कानूनी होते हुए भी वक्त की आवश्यकता है। माफिया ब्रदर्स और आतंकवादी में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। उद्देश्य जरूर अलग-अलग है परन्तु आम आदमी की जान की कीमत दोनों के लिए कुछ भी नहीं है। एक हमारे सिस्टम का पार्ट बनकर वार करता है और दूसरा सिस्टम के बाहर रह कर मारता है। इसलिए दोनों से निपटने का रास्ता एक ही है- एनकाउन्टर। दुनियाँ का सबसे पुराना प्रजातान्त्रिक मुल्क अमरीका को भी लादेन से निपटने के लिए इसी हथियार को काम में लेना पड़ा था।

उत्तर प्रदेश में पिछले छ: वर्षों में विकास दुबे, अरबाज, विजय चौधरी, शकील, असद अहमद, गुलाम, गौरी यादव, मनीष सिंह जैसे 183 कुख्यात वांटेड अपराधिओं को एनकाउंटर के हथियार से ही मार गिराया। एनकाउंटर असली हो या नकली, लादेन का हो या अतीक के बेटे असद का या फिर विकास दुबे का, फाईनली एनकाउन्टर आवश्यक है। इन पापियों के लिए नीति, नियम, धर्म, मर्यादा, न्यायालय की बात करने का समय समाप्त हो चुका है। याद रहे मानवाधिकार मानव के लिए होते हैं, दानव के लिए नहीं। पूर्णतया अनैतिक एवं गैरकानूनी मार्ग पर चलने वाले से नैतिकता एवं कानूनी तरीके से नहीं निपटा जा सकता है।

दोस्तों, यह नया भारत है जो समस्याओं को टालता नहीं है, समस्याओं से टकराना जानता है, उन्हें मिटाना जानता है। गंगा-यमुना की पावन भूमि की पवित्रता तथा ऋषि-मुनियों की कर्मस्थली की मर्यादा के लिए हमें भी भगवान श्री कृष्ण के सन्देश के अनुरूप सोच बनानी होगी।

–प्रो. कैलाश सोडाणी,
कुलपति, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ग्रामीण क्षेत्र में गर्मी का असर, तालाब सूखने से वन्य जीवों के लिए पानी की समस्या बढ़ी

- रामपुरा में किसान सज्जनसिंह अदाणी का बेहतरीन प्रयास
- किसान ने कुएं से तालाब भरना किया शुरू, 15 दिन का पानी किया स्टॉक

रानीवाड़ा, (नि.सं.)। जालोर जिले के रानीवाड़ा क्षेत्र में पहाड़ी वन्य क्षेत्रों सहित कई गांवों में तालाब के सूख जाने से बेसहारा और वन्य जीवों के लिए पीने के पानी की समस्या देखने को मिल रही है। ऐसे में कई समाजसेवी टांकों सहित अवाड़ों में टैंकरों से पानी डलवा रहे हैं। सिलासन ग्राम पंचायत के रामपुरा में किसान ने अपने कुएं से पाइप लाइन डालकर तालाब को भरने का मुश्किल भरा कार्य करने का ठाना है। तालाब भरने का कार्य जारी है।

बात रानीवाड़ा निवासी हाल रामपुरा सज्जनसिंह अदाणी की कर रहे हैं। इनके कृषि कुएं के पास तालाब आया हुआ है। रामपुरा गांव में बेसहारा पशुओं सहित पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण वन्य जीवों की तादाद इसी तालाब के पानी पर गर्मियों का मौसम गुजारती है। ऐसे में इस बार तालाब के गर्मी आते ही सूखने से मूक पशुओं के सामने पेयजल संकट खड़ा हो गया। ऐसे में सज्जनसिंह ने स्वविवेक से अपने कुएं के पानी को पाइपलाइन के जरिए तालाब में छोड़ दिया।

ग्रामीणों ने सज्जनसिंह के प्रयासों की सराहना करते हुए दूसरे किसानों को भी उनसे प्रेरणा लेकर मूक जीवों को बचाने के लिए सामने आने का आव्हान किया है, ताकि प्यास की वजह से किसी मासूम जीव की मौत न हो। दरअसल भीषण गर्मी के इस दौर में तालाब सूख चुके हैं और वन्य जीव पानी के लिए भटक रहे हैं। पानी नहीं मिलने से वे भटक कर रिहायशी इलाकों की तरफ आते हैं और कुत्तों का शिकार बनते हैं या सड़क एक्सिडेंट में बेमौत मारे जाते हैं। नर्मदा का पानी अपर्याप्त आपूर्ति होने से और पीएचइडी महकमा की ओस से इस ओर कोई ध्यान नहीं देने के बाद ग्रामीण और वन्यजीव प्रेमी खुद आगे आए हैं और सूखे तालाबों और पानी की खोलियों को भर रहे हैं सूखे तालाबों को भर रहे हैं।

सिलासन ग्राम पंचायत के रामपुरा में किसान सज्जनसिंह अदाणी ने अपने कुएं से पाइप लाइन डालकर तालाब को भरने का कार्य किया।

जलाराम धाम के संचालक सज्जनसिंह ने बताया कि पक्षियों और वन्यजीव वाले सिलासन, तावीदर, सोमेरा पर्वतीय क्षेत्र पानी के अभाव से परेशान वन्यजीवों के लिए आफत भरा अप्रैल महीना पूरा बीत जाने के बाद भी वन विभाग, राज्य सरकार और जनप्रतिनिधियों का रवैया अब तक वन्यजीवों के प्रति उदासीन ही रहा है। इस भीषण गर्मी में प्राकृतिक जलस्त्रोत, खोलियां, नाडे-नाडियां और तालाब सूखे हैं। ऐसे में बेसहारा बेजुबान पशुओं का कोई धणी धोरी नहीं है।

उन्होंने बताया कि कई जगह हालात तो इतने बदतर हैं कि वन्यजीव और मवेशी पानी के अभाव में दम तक तोड़ रहे हैं। इलाके के वडेटा, लाखावास, प्रागवड, तावीदर, कुडी, दांतवाड़ा सहित कई वन्य जीव इलाकों में जलसंकट है। ऐसे में वन्यजीव प्रेमी और ग्रामीण आगे आए हैं और सूखे तालाबों में पानी भर रहे हैं। ताकि वन्य जीवों और पक्षियों को पानी मिल सके और उनको भटकना नहीं पड़े।

महंगाई राहत कैंप के दूसरे दिन ही लोगों का रुझान टूटा

सांभरझील, (निसं)। यहां पालिका प्रशासन की ओर से पुरानी धानमंडी स्थित सराय स्कूल में वार्ड एक और दो के लिए संयुक्त रूप से लगाए जा रहे महंगाई राहत कैंप के दूसरे रोज से ही लोगों के आने का सिलसिला थम गया।

स्कूल परिसर के खाली मैदान में टेंट तानकर लगाए गए राहत शिविर में आज पूरे दिन अलग-अलग विभाग के कर्मचारियों के पास काम कराने वाले इक्का-दुक्का लोग ही नजर आए। ज्यादातर लोग ऐसे भी थे जो शिविर का जायजा लेने के लिए ही आए थे। कर्मचारी अधिकांश समय खाली बैठे रहे और शिविर समापन तक उनका टाइम पास होना भी मुश्किल हो गया। ऐसे हालत में कुछ कर्मचारी कूलर की हवा में सुस्ताते भी रहे। अधिशाषी अधिकारी हरिनारायण यादव से इसका कारण पूछा तो बताया कि शिविर के प्रथम रोज वार्ड संख्या 1 और 2 के अधिकांश लोग अपने कामों के लिए आए थे और उनको नियम अनुसार शिविर में जो लाभ मिलना चाहिए था वह दिया गया है हो सकता है इसी वजह से आज लोग कम आए हो।

कुछ लोगों का कहना है कि सरकार की ओर से इन शिविरों का लगाए जाने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि सरकार के पास व समस्त आंकड़े मौजूद पहले से ही हैं जो सरकार शिविर में पंजीयन के जरिए इकट्ठा करना चाहती है। कुछ जन प्रतिनिधियों ने यह भी बताया कि 2 माह तक लगातार शिविर आयोजित होने की वजह से नगरपालिका के कई महत्वपूर्ण कार्य एक प्रकार से ठप हो जाएंगे जो विकास में प्रमुख रूप से भूमिका निभाते हैं।

महंगाई राहत कैम्प में कर्मचारी अधिकांश समय खाली बैठे दिखाई पड़े।

राशिफल बुधवार 26 अप्रैल, 2023

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, पुनर्वसु नक्षत्र गुरूवार प्रात: 6:59 तक, सुकर्मा योग प्रात: 8:05 तक, तैतिल करण दिन 11:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 12:18 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कुमार योग दिन 11:28 पर समाप्त होगा। आज चन्दन छठ, गंगा सप्तमी, गंगोत्पत्ति, गंगा पूजन है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:11 से 2:03 तक, शुभ 10:46 से 12:26 तक, चर 3:40 से 5:17 तक, लाभ 5:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 6:53

मेष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले सुसंदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। महत्वपूर्ण योजना बनेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।